



एग्री आर्टिकल्स

(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)

वर्ष: 02, अंक: 01 (जनवरी-फरवरी, 2022)

www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध

© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

वैज्ञानिक विधि द्वारा जायद ऋतु में मूंग फसल उत्पादन (आमदनी बढ़ाने का एक आसान उपाय)

(*अनिल कुमार¹, एन० के० शर्मा², कोमल शेखावत¹ एवं स्वर्णलता कुमावत¹)

¹विद्यावाचस्पति शोधार्थी, अनुवांशिकी एवं पादप प्रजनन विभाग, कृषि महाविद्यालय, स्वामी केशवानन्द

राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर, राजस्थान- 334006

²आचार्य एवं अतिरिक्त निदेशक अनुसंधान (बीज), स्वामी केशवानन्द राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय,

बीकानेर, राजस्थान- 334006

* anilkumarthakan@gmail.com

मूंग खरीफ में उगाई जाने वाली एक मुख्य दलहनी फसल है। साथ ही सिंचित क्षेत्रों में जायद के मौसम में भी इसको सरलता से उगाकर अतिरिक्त आमदनी प्राप्त की जा सकती है। अल्प अवधि में पकने के साथ-साथ सुखे को सहन करने की क्षमता के कारण यह दलहनी फसलों में विशेष महत्व रखती है। नव विकसित उच्च उत्पादन क्षमता वाली उन्नत किस्मों ने इस फसल को किसानों में लोकप्रिय बनाये रखा है। राजस्थान मूंग का एक मुख्य उत्पादक राज्य है राज्य के मध्यम गठन वाली मृदाओं में बाराणी क्षेत्रों के लिए खरीफ की एक मुख्य दलहनी फसल है। इसका प्रयोग मुख्यतया दाल के रूप में किया जाता है। मूंग की दाल सर्वाधिक सुपाच्य व प्रोटीन हीनता को दूर करने वाली मानी जाती है। शाकाहारी लोगों के लिए मूंग प्रोटीन का प्रमुख स्रोत है। अंकुरित दलहन के रूप में इसका प्रचलन अधिक है। मूंग की दाल का हलवा एक उच्च गुणवत्ता युक्त मिठाई माना जाता है। भुजिया व पापड़ उद्योग में भी मूंग का बड़ी मात्रा में प्रयोग किया जाता है। मूंग की दाल की मंगौड़ी/बड़ियां भी बनायी जाती हैं। मूंग में शुष्क पदार्थ के आधार पर करीब 25-28 प्रतिशत प्रोटीन, 62-65 प्रतिशत कार्बोहाइड्रेट्स व 3.5-4.5 प्रतिशत रेशा होता है। इसमें लौह तत्व भी पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध है। मूंग मानव को पोषण देने के साथ-साथ पौधे की जड़ों की गांठों में पाये जाने वाले राइजोबियम जीवाणुओं द्वारा वातावरणीय नत्रजन संग्रहित कर भूमि की उर्वरा शक्ति भी बढ़ाता है। साथ ही यह फसल भूमि को प्राकृतिक आवरण प्रदान कर नमी व कार्बनिक पदार्थ के संरक्षण के साथ-साथ जल व वायु अपरदन द्वारा मिट्टी कटाव को रोकने का काम भी करती है। मूंग को एकल फसल व मिश्रित खेती के रूप में बाजरा, ज्वार व मक्का आदि फसलों के साथ भी उगाया जाता है। कृषि वानिकी के लिए भी मूंग एक उपयुक्त फसल है।

खेत का चुनाव

मूंग की अच्छी उपज के लिए अच्छे जल निकास वाली दोमट या बलूई मृदा उत्तम हैं। रेत के टीलों व कमजोर भूमियों पर भी मूंग की खेती की जाती है। लवणीय, क्षारीय व जल भराव वाले क्षेत्र मूंग के लिए उपयुक्त नहीं पाये जाते हैं। जिस खेत में पिछले वर्ष मूंग की फसल ली गई हो, उस खेत में कुछ वर्ष तक मूंग की खेती नहीं करनी चाहिये।

जिले का नाम	क्षेत्रफल (लाख है.)	उत्पादन (लाख टन)	उत्पादकता (किलो/है)
नागौर	5.58	3.35	602
जोधपुर	3.16	2.32	734
चूरु	2.83	1.30	460
पाली	2.53	0.81	320
जयपुर	1.19	0.81	685
अजमेर	1.15	0.71	616
जालौर	1.03	0.55	534
टोंक	0.71	0.32	459
बीकानेर	0.47	0.16	355
सम्पूर्ण राजस्थान	23.26	13.04	561

स्रोत: राजस्थान कृषि सांख्यिकी 2019-20, कृषि विभाग राजस्थान सरकार, जयपुर

खेत की तैयारी

मानसून की पहली बारिश के बाद आवश्यकता अनुसार एक या दो बार अच्छी जुताई कर भूमि को भुरभुरा व खरपतवार रहित बना लेवें तथा पाटा लगाकर बुवाई के लिए तैयार करें।

बीज उपचार

बुवाई पूर्व बीज को फफूंदनाशी, कीटनाशी एवं जैव उर्वरक के उचित क्रमानुसार उपचारित करके ही बुवाई करनी चाहिये इसके लिए प्रति किग्रा बीज में 3 ग्राम थाईरम या केप्टान नामक दवा मिलाकर उपचारित करें। मूंग की जड़ों की गांठों का विकास अच्छा होकर पौधों को वायुमण्डल की नत्रजन की उपलब्धता बढ़ाने के लिए उपयुक्त राइजोबियम कल्चर से उपचारित करें। साथ ही मुदा में उपस्थित फास्फोरस की उपलब्धता बढ़ाने के लिए पी एस बी से भी उपचारित करना चाहिये। इसके लिए प्रत्येक (राइजोबियम एवं पी एस बी) जैव उर्वरक की 600 ग्राम मात्रा प्रति हैक्टर की दर से प्रयोग करें।

भूमि उपचार

दीमक और मृदा जनित कीटों से बचाव के लिए 20-25 किग्रा. क्यूनालफॉस 1.5 प्रतिषत चूर्ण प्रति हेक्टेयर की दर से बुवाई पूर्व खेत तैयार करते समय जुलाई माह के अंतिम सप्ताह के समय खेत में एक समान मिलायें।

बुवाई का समय

मूंग की बुवाई का सर्वोत्तम समय जून माह का द्वितीय पखवाड़ा माना गया है। यदि मानसून का आगमन देरी से होता है तो जुलाई माह के द्वितीय पखवाड़े में भी बुवाई कर सकते हैं। जायद फसल के लिए तापमान के आधार पर फरवरी माह के द्वितीय पखवाड़े से मार्च माह के मध्य तक बुवाई कर सकते हैं।

बीज दर व बुवाई

उन्नत किस्म का बीज बुवाई हेतु काम में लें। मूंग की एकल फसल की बुवाई 12-15 किग्रा प्रति हैक्टर बीज दर से 4-5 सेमी की गहराई पर कतारों में 30 सेमी की दूरी पर सीडड्रिल द्वारा करें व पौधे से

पौधे के बीच करीब 8-10 सेमी की दूरी रखें। मिश्रित फसल हेतु 8-10 किग्रा. प्रति हैक्टर बीज पर्याप्त रहता है।

मूंग की प्रमुख किस्में

क्र.सं.	किस्म का नाम	जारी किये जाने का वर्ष	पकाव अवधि (दिन)	उपज क्षमता (क्वि./है.)
1	एम एच 421	2014	60	11-13
2	एस एम एल 832*	2013	60-65	7-14
3	आई पी एम 02-14	2011	60-65	10-12
4	आई पी एम 02-03	2009	70-72	10-12
5	जी एम 4	2003	65-70	13-14
6	एस एम एल 668*	2003	60-65	12-16

*जायद में खेती के लिए भी उपयुक्त किस्म है।

खाद एवं उर्वरक

मृदा का स्वास्थ्य और उर्वरा शक्ति बनाये रखने हेतु उपलब्धतानुसार तीन वर्ष में एक बार 8-10 टन प्रति हैक्टर सड़ी हुई गोबर की खाद का प्रयोग करें। बुवाई के समय 20 किग्रा. प्रति हैक्टर नत्रजन एवं 32 किग्रा. फास्फोरस का प्रयोग करें। इस हेतु खेत तैयार करते समय प्रति हैक्टर 44 किग्रा. यूरिया एवं 200 किग्रा सिंगल सुपर फास्फेट या 70 किग्रा. डी.ए.पी. व 16 किग्रा. यूरिया बुवाई से पहले ऊर कर भूमि में मिलाए। बुवाई के समय 40 किग्रा. गन्धक या 240 किग्रा जिप्सम जुलाई माह के अंतिम सप्ताह के समय प्रति हैक्टर की दर से प्रयोग करना लाभदायक पाया गया है।

निराई-गुड़ाई व खरपतवार नियंत्रण

खरपतवार नियंत्रण, नमी संरक्षण व मृदा में अच्छे वायु संचार हेतु बुवाई के 20-25 दिन बाद निराई-गुड़ाई करें। कतारों में बोई सिंचित फसल में प्रथम सिंचाई के बाद एक-दो बार निराई-गुड़ाई अवश्य करें। आवश्यकता होने पर रसायनिक खरपतवार नियंत्रण हेतु बुवाई के बाद मृदा में नमी की अवस्था पर इमेजाथापर पेंडिमैथालिन (2% + 30%) नामक दवा की 2400 मिली. मात्रा 500 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।

सिंचाई

खरीफ ऋतु में मूंग की फसल मानसूनी वर्षा पर निर्भर करती है। पर्याप्त वर्षा न होने पर बुवाई के 25-30 दिन बाद पहली सिंचाई और 40-50 दिन बाद (दाना बनने पर) दूसरी सिंचाई कर देनी चाहिए। जायद ऋतु में फसल की आवश्यकतानुसार सिंचाई करते रहें।

पौध संरक्षण

कातरा कीट के नियंत्रण हेतु मिथाईल पैराथिआन 2 प्रतिशत या क्यूनालफास 1.5 प्रतिशत या फेनवलरेट 0.4 प्रतिशत या कार्बेरिल 5 प्रतिशत धूल 25 किलो प्रति हैक्टर की दर से भुरकाव करें। जहां पानी उपलब्ध हो वहां क्यूनालफास 25 ई.सी. या क्लोरपायरीफोस 20 ई सी 1.0 लीटर प्रति हैक्टर की दर से छिड़काव करें। मानसून की वर्षा के साथ जमीन से निकलने वाले कातरे के पतंगों को प्रकाश पाश लगाकर भी प्रभावी नियंत्रण किया जा सकता है।

मोयला, सफेद मक्खी, हरा तैला कीटों के नियंत्रण हेतु ट्राइजोफोस 40 ई.सी. 1.0 लीटर या मिथाईल डेमोटोन 25 ई.सी. 1.0 लीटर या डाइमथोएट 30 ई.सी. 1.0 लीटर या थायो मेथोक्जाम 25 जी 100 ग्राम प्रति हैक्टर 400-500 लीटर पानी में या इमिडाक्लोपरिड 1.0 मिली प्रति 3 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें। आवश्यकतानुसार 15 दिन बाद छिड़काव दोहरावें।

फली छेदक के नियंत्रण हेतु मोनोक्रोटोफोस 36 डब्ल्यू.एस.सी. या क्यूनालफास 25 ई.सी. 1.2 लीटर या कार्बोरिल 50 प्रतिशत घुलनशील चूर्ण 2.5 किलो प्रति हैक्टर की दर से फूल व फली आते ही छिड़काव करें।

चित्ती जीवाणु रोग के नियंत्रण हेतु स्ट्रेप्टोसाइक्लिन 2.5 ग्राम एवं कापर ऑक्सीक्लोराइड का 30 ग्राम प्रति 10 लीटर पानी में घोल बनाकर बीमारी के लक्षण दिखाई देते ही छिड़काव करें। बीज को एग्रीमाईसीन 250 पी.पी.एम. या स्ट्रेप्टोसाइक्लीन 2000 पी.पी.एम. के घोल में 2 घंटे भिगोकर उपचारित कर बुवाई करें। 2 सरकोस्पोरा रोग में पत्ती, डंठल व फलियों पर कोणदार भूरे लाल रंग के धब्बे बन जाते हैं। इसकी रोकथाम के लिए टोप्सिन एम या कार्बेण्डेजिम 2 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।

कटाई गहाई व भंडारण

फलीयो के झड़कर होने वाली हानि रोकने के लिये फलियों को पूरी तरह पकने के बाद झड़ने से पहले काट लें। पकी सफल को काटकर साफ-सुथरे खलिहान पर एक सप्ताह या दस दिन सुखा लेवें व ग्रैशर से गहाई करें। बाद में ग्रेडर मशीन से साफ सफाई कर करीब 10 प्रतिशत नमी पर जूट बैग में पैकिंग कर साफ-सुथरे भंडारगृह में भंडारण करें।

उपज

समय पर बोयी गयी व अच्छी तरह प्रबंधित फसल से अनुकूल परिस्थितियों में मूंग का 12-15 क्विंटल प्रति हैक्टर दाना प्राप्त किया जा सकता है।

